

कश्मीरी भाषा और साहित्य

शोधार्थी परवैजा अख्तर

संस्कृत विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर

भारत के संविधान में अन्य प्रादेशिक भाषाओं के समान ही कश्मीरी भाषा को भी राष्ट्रीय मान्यता दी गई है। कश्मीरी भाषा कब और कैसे उभरी इस पर किन किन भाषाओं का प्रभाव है, यह आज तक विवादित प्रश्न रहा है। इस विषय में विद्वानों के बीच काफी मतभेद रहा है। फिर भी समय समय पर विद्वानों ने इस विषय में अपनी मान्यताएँ प्रस्तुत की हैं। ग्रियर्सन महोदय आदि विद्वानों का विचार है कि कश्मीरी दरद परिवार की भाषा है जो कि भारत-ईरानी की उपशाखा है। प्रसिद्ध विद्वान प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प इसे पैशाची का विकसित रूप मानते हैं।¹ अब्दुल अहद आज़ाद के मतानुसार कश्मीरी का उद्भव इब्रानी भाषा से है क्योंकि प्राचीन काल में सीरिया (शाम) से यहूदियों के कुछ समूह कश्मीर में आकर बस गए। यह समूह अपने साथ अपनी भाषा भी लाये थे। इन की भाषा इब्रानी थी जिसका प्रभाव कश्मीरी भाषा पर पड़ा।² डॉ. सुनीताकुमारी चटर्जी का विचार है कि संस्कृत का सब से अधिक प्रभाव कश्मीरी भाषा पर पड़ा।³ कुछ विद्वान कश्मीरी का उदगम संस्कृत नहीं अपितु यह इब्रानी संतति मानते हैं। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो यहाँ का प्राचीन इतिहास संस्कृत भाषा में ही लिखा गया है जो हमारे पास आज भी विद्यमान है। कश्मीरी भाषा का उदगम कहाँ से हुआ। इस विषय पर शोध हो रहा है और अधिकाँश विद्वान इस निष्कर्ष

पर पहुंचे हैं कि कश्मीरी भाषा संस्कृत से विकसित हुई है । कश्मीरी भाषा में लगभग अस्सी प्रतिशत शब्द संस्कृत भाषा से ही उद्भूत हैं ।

कश्मीरी साहित्य का आरम्भ कब हुआ कैसे इसका विकास हुआ निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है । कहा जाता है कि कश्मीर में 13वीं शताब्दी तक संस्कृत भाषा का प्रधान्य था । कल्हण, बिल्हण, वासुगुप्त, अभिनवगुप्त जैसे विद्वानों ने संस्कृत साहित्य को अमूल्य देन दी हैं । कुछ विद्वान शितिकंठ के 'महानय प्रकाश' को ही कश्मीरी की प्रथम रचना मानते हैं । प्रो० जियालाल कौल 'महानय प्रकाश' को कश्मीरी की प्रथम कृति मानते हैं । उनके अनुसार इस कृति की भाषा शुद्ध कश्मीरी है ।⁴ केवल इतना कहा जाता है कि रचना लल्लद्यद के सौ वर्ष पूर्व लिखी गई है । यद्यपि कश्मीरी साहित्य का प्रारंभ लल्लद्यद से पूर्व शितिकण्ठ के 'महानय प्रकाश' से होता है परन्तु 'महानय प्रकाश' की भाषा उतनी समीप की वृत्ति नहीं जितने लल्लद्यद के वाख । लल्लद्यद की कश्मीरी वर्तमान कश्मीरी के काफी निकट है । इनका वाख-साहित्य कश्मीरी साहित्य की अमूल्य निधि है । कश्मीरी भाषा में विकास की दृष्टि से लल्लद्यद और नुन्द ऋषि का महत्वपूर्ण स्थान है ।⁵

कश्मीरी की साहित्यिक परम्परा को विद्वानों ने विभिन्न कालों में विभाजित किया है । अब्दुल अहद आज़ाद, प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प, प्रो० जियालाल कौल, अवतार कृष्ण रहबर आदि का नाम उल्लेखनीय हैं ।

प्रो० जियालाल कौल⁶ की दृष्टि से कश्मीरी साहित्य का काल विभाजन :-

1. प्रथम काल	१५५५ तक
2. द्वितीय काल	१५५५-१७५२
3. तृतीय काल	१७५२-१९२५
4. चतुर्थ काल	१९२५-१९४७

अब्दुल अहद आज़ाद ने कश्मीरी साहित्य को चार कालों में विभाजित किया है⁷ :-

1. प्रथम काल	१४२२
2. दूसरा काल	१५९६-१८४८
3. तीसरा काल	१८५५-१९००
4. चौथा काल	१९००

प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प ने कश्मीरी साहित्य को पाँच कालों में विभक्त किया है⁸ :-

1. आदिकाल	१२४०-१४००
2. प्रबन्धकाल	१४००-१५५०
3. गीतकाल	१५५०-१७५०
4. प्रेमाख्यान काल	१७५०-१९००
5. आधुनिक काल	१९००

अवतार कृष्ण रहबर ने अपनी पुस्तक 'कश्मीरी अदबच तारीख' में कश्मीरी साहित्य का विभाजन इस प्रकार दर्शाया है :-

1. प्रारम्भिक अथवा निर्गुण-भक्तिकाल	१२००-१५५५
-------------------------------------	-----------

2. मध्यकाल या गीतकाल	१७५५-१७५७
3. संधिकाल अथवा भक्ति-श्रृंगारकाल	१७५७-१९२५
4. आधुनिककाल	१९२५-१९४७

आधुनिक काल (१९२५) को श्री रहबर ने दो खण्डों में पुनः विभक्त किया है, १९२५ से १९४७ तक तथा १९४७ से अब तक ।

इसी प्रकार अनेक विद्वान इस दीर्घकालीन साहित्य को चार कालों में विभक्त करके इस प्रकार दर्शाते हैं :-

अध्यात्मिक-काल :- कहा जाता है कि इस काल के सर्वप्रथम लेखक दार्शनिक विचारधारा के प्रसिद्ध विद्वान शितिकण्ठ हुए हैं 9 | कश्मीरी साहित्य में इस विचारधारा को आगे ले जाने में लल्लदयद एवं नुन्द ऋषि का विशेष योगदान रहा है | कश्मीरी इतिहास का अध्ययन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि 14वीं शताब्दी के पूर्व में प्रसिद्ध कवयित्री लल्लदयद का जन्म हुआ | इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि लल्लेश्वरी का जन्म हिंदू जाति के कश्मीरी पंडित घराने में हुआ है | लल्लदयद को प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा अपने कुल-गुरु सिद्धमोल से प्राप्त हुई 10 | लल्लदयद का प्रत्येक वाख दार्शनिक चेतना का आगार है | जिस पर मुख्यतः शैव, वेदान्त तथा सूफी मत का प्रभाव भी देखने को मिलता है | उसने शिव को परमतत्व माना है | वह निर्गुण निराकार है | शिव सर्वव्याप्त है तथा सर्वशक्ति मान है |

शिव छुई थलि थलि रोज़ान

मो जान ह्युन्द त मुसलमान

त्रुक अयि छुक ति पान परज़िनाव

सोयि छायि साहिबस ज़ानि ज़ान

अर्थात् शिव कण कण में व्याप्त है | आपस में हिंदू एवं मुसलमान का भेदभाव भूल कर उसकी शरण में जाओ, यदि बुद्धिमान हो तो मेरी बात समझ लो, यही वास्तव में ईश्वर की पहचान है |

लल्लदय्द ईश्वर से एकस्थित होकर पूर्ण लगन के साथ प्रेम और उसे अपने में विद्यमान पाया था |

(पंडित पननि गरे |

वूछुम शिव त शक्ति मिलीथ) ||

परमतत्व में लीन होने के लिए गुरु उपदेश आवश्यक है | स्वयं लल्लदय्द इस बात की ओर संकेत करती हैं :-

गोरन वनुनम कुनुय वचुन

न्यबर दोपनम अन्दर अचुन

तवय ह्योतूम नंगय नचुन |

गुरु ने मुझे एक अध्यात्मिक बात बताई-संसार के मोह बंधन को छोड़ और अपने अंतर को खोज | उसी कथन को मैंने अपने लिए उपदेश समझा और इस कारण मैं विवस्त्र नाचने लगी |

काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से भी 'लल्लवाख' श्रेष्ठ है | इस महान कवयित्री की भाषा मूलतः निष्ठ है इसी कारण वाखों में संस्कृत शब्दों का प्राचुर्य है |

लल्लदयद के पश्चात प्रसिद्ध संत कवि शेख नूर-दीन वली हुए हैं | नुन्द ऋषि का जन्म कब हुआ था इस पर विद्वानों के भिन्न भिन्न मत है और मरण तिथि पर भी अधिक विवाद है | शेख नूर-दीन वली की जीवन संबंधी जो सामग्री मिलती है, वह मुख्यतः विभिन्न ऋषिनामों पर आधारित है | बाल्यकाल में ही इनका विवाह हुआ था और कुछ ही समय पश्चात् ग्राहस्थिक जीवन से निराश होकर वे गुफा में रहने लगा 11 और उसी गुफा में बारह वर्ष तक कठिन तपस्या की | इन्द्रियों को शेख ने एक शत्रु के रूप में माना है जिन से वह सतर्क रहने का बार-बार उपदेश देते हैं |

नफसय मोरुस तु वाय

खटिथ रूदुम गटे

अथि हय यिहम तु हाय

करतल छुनहस हटेय |

अर्थात् मुझको नफस ने मार डाला, वह अंधेरे में मुझ से दूर बैठा है न जाने कहाँ | यदि वह मेरे हाथ आता तो मैं उसका गला तलवार से काट देता |

शेख नूर-दीन वली सदाचार, पारस्परिक सद्भाव ज्ञान तथा ईश्वर भक्ति पर अधिक जोर दिया है उनके श्रुकों अथवा श्लोकों में ज्ञात-पात का विरोध लक्षित होता है | वे हिंदू और मुसलामानों को एक ही माता-पिता का संतान मानते हैं |

उत्थान काल :- कहा जाता है कि सन् १३३९ ई. १५५५ 12 तक विभिन्न शाहमीरी सुलतान कश्मीर पर राज करते रहे |

जिन में सुलतान शमसुद्दीन, सुलतान कुतुबुद्दीन, सुलतान शहाबुद्दीन, सुलतान सिकंदर बुतशिकन, सुलतान जेनुलआबिदीन, सुलतान हसन शाह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं | इस वंश के सर्वाधिक लोकप्रिय सुलतान में यहाँ की हिंदू एवं मुसलमान जनता को समान अधिकार प्राप्त हुए | उनके शासन काल में कला एवं साहित्य की विशेष उन्नति हुई | बडशाह के राज्यकाल में कश्मीरी भाषा तथा साहित्य का सर्वांगीण विकास हुआ | उन्होंने कश्मीरी भाषा में लिखी कई पुस्तकों का अनुवाद फ़ारसी में करवाया और संस्कृत व फ़ारसी की कुछ ग्रंथों का कश्मीरी में अनुवाद करवाया | जनता के हित में किये उसके कार्यों के कारण कश्मीरी इतिहास में उसे बडशाह अर्थात महान शासक कहा जाता है 13 |

उनके शासनकाल में जिन कवियों ने कश्मीरी में काव्य रचना की उनमें उल्लेखनीय है :- श्रीवर, सोमपण्डित, बाबा नसीउद्दीन, बाबा बामुद्दीन, योधभट्ट आदि |

शाहमीरी वंश का अंत होते ही चक नरेशों ने कश्मीर पर राज किया | इस काल में रानी हब्बाखातून का जन्म चंदहार गाँव के एक सामान्य कृषक के घर में हुआ था | इनका नाम जून (चंद्रमा) था | एक जनश्रुति है कि जून सचमुच चाँद जैसी सुंदर थी | प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इनके माता-पिता ने इनका विवाह करने का निर्णय किया | दुर्भाग्य से यह रिश्ता अधिक दिनों तक न चल सका, क्योंकि अजीज़ लोन मुखर्ष एवं कठोर हृदयी था | एक दिन अपनी सखियों के संग खेत पर काम करते हब्बाखातून गीत की कुछ पंक्तियाँ अपनी मधुर कण्ठ में गुनगुना रही थी | इसी बीच राजा युसुफशाह शिकार की खोज में उधर से गुज़रा | यूसुफशाह उसके संगीत-कौशल को देख कर

उस पर मुग्ध हो गए और कुछ समय के पश्चात अज़ीज़ लोन से तलाक़ दिलवाकर यूसुफ़शाह ने हब्बाखातून के साथ विवाह किया 14 | हब्बा के जीवन में एक अन्य महान घटना हुई | यूसुफ़शाह मुग़लों द्वारा बंदी बनाए जाने के कारण उनका सम्पूर्ण हृदय फूट पड़ा और अपने प्रियतम के विरह में तड़पती रही | इस युग में उन्होंने अपने प्रेमी के वियोग में जो गीत गाये, वह कश्मीरी साहित्य की एक अमूल्य निधि है |

च कम्पू सोनि म्यानि ब्रम दिथ न्युनखो

च किहोज़ी गायि म्या न्य दुय

चख़ त्राव वुय मलाल व् वंद छुय न यिवान

च किहोज़ी गायि म्या न्य दुय

अर्थात् तुझे मेरी किस सौत ने भरमाया जो आप नफरत करने और विरक्त रहने लगे मुझसे पिया | मेरे पिया छोड़ दे यह मलाल यह गुस्सा, तुझे मैंने कब से बसा लिया | मैं आश्चर्य हूँ कि तुझे मेरे साथ क्यों नफरत होने लगी |

हब्बाखातून कश्मीरी प्रेम गीतों की जननी मानी जाती है | उनके गीतों में जो दर्द है वह शायद कहीं ओर मिलना मुश्किल है | कश्मीरी संगीत को सर्वप्रथम संपादित करने का श्रय उन्हीं को दिया जाता है 15 |

हब्बाखातून के पश्चात एक ओर महत्वपूर्ण कवयित्री अरणीमाला है | इनका जन्म जिला बारामुला के पल्हालन गाँव के एक हिंदू परिवार में हुआ था | अपने जन के बारे में कवयित्री एक स्थान पर स्वयं संकेत करती हैं :-

सोन ही फोजखय वनन त क्रडजालन

पलहालन माल्युन छुय 16 |

रे यासमन के सुनहरी फूल तू जंगलों एवं झाड़ियों में खिल उठा 'पलहालन' में तेरा पीहर है | कहा जाता है कि इनका विवाह युवावस्था में ही उस समय के एक प्रसिद्ध विद्वान भवानीदास काचरू के साथ हुआ था | भवानीदास काचरू एक दरबारी कवि थे, वे दरबारी रंगा रंग में इतना अधिक खोए कि विवाह के कुछ समय पश्चात ही उन्होंने अरणीमाला को त्याग दिया | अरणीमाला के लिए यह एक गहरा घाव था जिसने उसे कवि बना दिया | अरणीमाला न जाने क्या क्या सपने क्या क्या उम्मीदें और कल्पनाएँ आँखों में बसाकर गई होगी पर वह सब उस निष्ठुर पति ने राख कर दिये थे | इसके अतिरिक्त भी वे अपने पति को प्रिय पुरुष मानती रही कि शायद कभी न कभी वह मेरे पास आएगा | पति द्वारा त्याग दिए जाने के बाद वे अपने पिताग्रह में रही | उसका दिल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी, फिर भी इसका कोई प्रभाव उसके पति पर नहीं पड़ा | उनके गीतों में जो दर्द अभिव्यक्त है उसकी मार्मिकता तथा सुन्दरता का कश्मीरी लोकमानस पर अधिक प्रभाव पड़ा है |

ख्वाजा हबीब का जन्म नोशहरा में हुआ था | पिता का नाम शमस गनाई बताया जाता है | पिता के कहने पर नमक का व्यवसाय करते थे लेकिन इस व्यापार से इनका जी नहीं लगा | इसके लिए प्रसिद्ध है कि इन्होंने कभी तराजू को हाथ नहीं लगाया | ग्राहक स्वयं सौदा तोल के ले जाते हैं, क्योंकि वे कुरआन-पाक का अध्ययन करने में व्यस्त रहते थे | इन्होंने अधिक फ़ारसी भाषा में ही कहा तथा कश्मीरी में इनके कलाम की मात्रा बहुत कम है | मौशहरी के गीतों में सूफीयत का रंग अधिक देखने को मिलता है |

च रोसतुय दिन क्योह बरयो मदनो

म्यानि मदनो लदयो दानपोश त ही

छारान लूस स कोह नो वदयो

दपतो च कम्पू प्रज छय

हावतम दीदार छम चान्य ला दिनो

म्यानि मदनो लदयो दानपोश त ही ।

अर्थात् ऐ मेरे प्यारे में तेरे बिना दिन कैसे बिताऊँ तो आ,
में तुझे आनार तथा जूही पुष्प दूँ । तुझे ढूँढते ढूँढते मैं ढलते सूर्य
की सदृश्य क्षाम हो गई । अब बता तू कहाँ चला । अपना दीदार
तो दे, मैं कब से तेरी आस लगाए बैठा हूँ । आ, तुझे अनार तथा
जूही के पुष्प दूँ ।

साहब कौल इस युग के एक ओर महत्वपूर्ण कवि रह चुके
हैं । इनका जन्म श्रीनगर के हब्बाकदल इलाके में हुआ था ।
इन्होंने कश्मीरी तथा संस्कृत दोनों में कवितायें की । संस्कृत में
रचित इनकी काव्य रचनाएं 'देवी विलास', 'शिव-सिद्ध-नीति',
'गुरुव्रत-चिंतामणि', 'गीता-सार', आदि । कश्मीरी में रचित इनकी
दो काव्य रचनाएं हैं 'कल्प-वृक्ष', और 'जन्मचरित' । कहा जाता है
कि कल्पवृक्ष एक कलापूर्ण कृति है । जिसमें कश्मीरी के अतिरिक्त
संस्कृत, फ़ारसी से लद्दाखी तक के शब्दों का प्रयोग किया गया
है ।

'जन्मचरित' के बारे में कहा गया है कि यह इनकी प्रसिद्ध
काव्यकृति है और लम्बी कविता भी है । जिसमें ज़िन्दगी अपनी
कथा स्वयं कहती है । इस कविता के मुख्य विषय यही है कि
वह कहाँ से आया, कश्मीर कैसे पहुंचा, उस पर किन किन

सम्प्रदायों का प्रभाव पड़ा | उनकी अन्य दो कश्मीरी रचनाओं 'कृष्णावतारचरित' एवं 'आत्मचरित' का भी उल्लेख मिलता है |

रूपभवानी (अखिलेश्वरी) :- संत परम्परा को आगे ले जाने वाली में रूपभवानी का नाम भी उल्लेखनीय है | इनका जन्म भिन्न भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न माना है | निश्चित रूप से इतना कहा जाता है कि इनका जन्म श्रीनगर के हिंदू जाति माधवराम (दर) के घर में हुआ था | अपने पिता से ही गुरु शिक्षा ग्रहण की थी | उन्होंने घर में ही संस्कृत एवं फ़ारसी की शिक्षा भी प्राप्त की थी | रूपभवानी का विवाह अल्प आयु में ही हुआ था | इन्हें भी लल्लद्यद के ही समान ससुराल में अपनी सास का कुव्यवहार सहन करना पड़ा | परिणामस्वरूप यही हुआ कि कुछ समय के पश्चात ही पति के घर को छोड़ के अपने पिताग्रह चली आई और कहा जाता है कि वे मायके में भी संतुष्टि से नहीं रह पाई | घरबार छोड़ कर चश्मासाहबही, मनिगाम, लार तथा वाकुर आदि स्थानों में वर्षों भटकने के बाद कवयित्री ने जीवन के अंतिम वर्ष अपने मायके में ही व्यतीत किए | इनके पद कश्मीरी के अतिरिक्त संस्कृत, फ़ारसी तथा हिंदी भाषा में भी मिलते हैं¹⁸ |

'महमूद गामी' भी एक महत्वपूर्ण कवि है | इनका जन्म अनंतनाग तहसील में डूरुगाँव के पास हुआ था | यह वह युग था जब कश्मीर में फ़ारसी राजभाषा थी, और कश्मीरी में लिखना एक साहस का काम था | उन्होंने अपनी कविता कश्मीरी में ही अधिक लिखी तथा फ़ारसी में कम | महमूद की कृतियों में 'लैला मजनून', 'यूसुफ जुलेखा' और एक अन्य श्रेष्ठ मसनवी 'शेखसेना'¹⁹ |

इस युग के दुसरे प्रसिद्ध कवि वली उल्लाह मतु हुए हैं । मतु के जन्म और मरण तिथि पर निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है । इतना ज्ञात है कि वे बडगाम कसबे के बुहन गाँव के रहने वाले थे और मृत्यु मदीने में हुई । उन्होंने कश्मीरी भाषा में मसनवी 'हीमाल नागराय' और दो अन्य कृतियाँ 'चिहिल-असर' एवं 'जरूरियाते दीन' लिखी²⁰ । मुहम्मद योसुफ टंग का कहना है कि 'मसनवी हीमाल नागराय' एक ऐसा कथन है जिसकी कथाभूमि कश्मीर है जो यहाँ की उपज है । मतु अपने इस मसनवी के लिए प्रसिद्ध हैं ।

महमूद गामी के समकालीन में एक ओर प्रसिद्ध कवि मकबूलशाह क्रालवारी । क्रालवार गाँव में मकबूलशाह उत्पन्न हुए थे । उनका जीवन दुखों से भरा हुआ है उन्होंने सारी जिन्दगी सदमे एवं तकलीफों को सहते हुए बिता दी और इस दर्द को अपने कविता में व्यक्त किया । 'गुलरेज़' उनकी सर्वोत्कृष्ट काव्य कृति मानी जाती है । इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य काव्य ग्रंथों की भी रचना की है, जिनमें 'बहारनामा', 'ग्रीस्तनामा', 'पीरनामा', 'आबनामा', 'बेबूझनामा', और 'नारनामा', लेकिन ये आज उपलब्ध नहीं हैं ।

प्रेमाख्यान काल:- इस काल का संपूर्ण काव्य मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त होता है । प्रथम भाग के अंतर्गत वह काव्य आता है जिस का मूलाधार सूफी दर्शन है । इस काव्य-वर्ग के प्रेममार्गी कवियों ने उनके सूफी काव्यों की रचना की । इन में प्रमुख हैं :- न्याय साहिब, शाह-गफूर, रहमान डार, वाज़ा महमूद, शमस फ़कीर, अहमद बटवारी, स्वच्छक्राल, समदमीर, अहद ज़रगर आदि । दूसरे के अंतर्गत वह काव्य आता है जिसका मूलाधार राम भक्ति एवं

कृष्ण भक्ति है | इस काव्य वर्ग के कवियों ने राम तथा कृष्ण सम्बंधित चरित काव्यों को कश्मीरी में काव्य रूप देने में विशेष सफलता प्राप्त की है | प्रकाशराम, कृष्णराजदान, परानंद, लक्ष्मण रैना बुलबुल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं 21 |

आधुनिक युग :- इस काल का प्रारंभ आज़ाद, महजूर और दीनाथ नादिम की रचनाओं से होता है | इस युग के प्रसिद्ध कवियों में महजूर लोकप्रिय है | इनका जन्म पुलवामा तहसील के मित्रिगाम में हुआ था | वे आरम्भ में फ़ारसी भाषा में लिखने लगे लेकिन तुरंत ही देशी भाषा की ओर आकृष्ट हुए | इनके गीतों को खेतों में काम करनेवाले किसान, पाठशालों में पढ़ने वाले छात्र सभी एकरूप से गाते हैं |

महजूर के समकालीन एक ओर सर्वश्रेष्ठ आधुनिक कवि अब्दुल अहद आज़ाद | इनका जन्म रंगर नामक गाँव में हुआ था | उन्होंने पंद्रह सोलह वर्ष की आयु में ही कश्मीरी में अपनी पहली गज़ल की रचना की, लेकिन बाद में उर्दू में लिखने लगे थे | आज़ाद एक महान कवि होने के साथ साथ एक विद्वान भी थे | दुर्भ गय से उनकी मृत्यु अल्प आयु में ही हुई |

पण्डित दीननाथ नादिम एवं मास्टर जिंदा लाल कौल भी इस युग के प्रसिद्ध कवि माने जाते थे | प्रो० रहमान राही भी कश्मीरी भाषा के एक प्रसिद्ध कवि है | राही साहब कश्मीरी भाषा के एक प्रगतिशील लेखक माने गए हैं |

निश्चय रूप से कहा जाता है कि अनेक अन्य कवियों ने इस क्षेत्र में उत्तम योगदान दिया, जिनमें प्रसिद्ध हैं- गुलाम रसूल नाज़की, नूर मुहम्मद रोशन, गुलाम नबी फिराक, अमीनकामिल,

नंदलाल अम्बारदार, मक्खन लाल, चमन लाल चमन, प्रेमनाथ, गुलाम नबी खयाल | कश्मीरी भाषा में गद्य का विकास आधुनिक युग में ही हुआ | कश्मीरी साहित्य में उपन्यास तथा कहानियों की रचना भी बहुत मिलती हैं |

कश्मीरी भाषा में 'भोंगवेश' एवं 'गुलरेज़' दो पत्रिकाएँ कुछ समय तक प्रकाशित होती रही | आज कल कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी विभाग के संरक्षण में 'अनहार' पत्रिका प्रकाशित हो रही है और कलचरलअकादमी द्वारा 'शीराज़ा' प्रकाशित हो रही है | जम्मू कश्मीर अदबी मरकज़ कामराज़

निसंदेह कश्मीरी भाषा और साहित्य का भविष्य बड़ा कान्तियुक्त है | राज्य सरकार की ओर से भाषा की उन्नति के लिए अधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है एवं सहायता भी मिल रही है | अपनी भाषा की उन्नति के लिए आज का विद्वत समाज तन, मन एवं धन से लगा है |

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.29. डॉ.शिबन कृष्ण रेणा, प्रकाशक संमार्ग प्रकाशन दिल्ली, १९७२
2. कश्मीरी जुबान और शायरी भाग 1, पृष्ठ.28. अब्दुल अहद आज़ाद, प्रकाशक कलचरल अकादमी जम्मू कश्मीर श्रीनगर, २००५
3. 'कश्मीर' खण्ड चार, पृष्ठ.७५
4. लिट्रेचर इन माडर्न इन्डियन लैंग्वेजज़, पृष्ठ. ९६
5. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.२३
6. स्टडीज़ इन कश्मीरी, पृष्ठ.२८-२९
7. कश्मीरी ज़बान और शायरी भाग 2, पृष्ठ.५६-१०३
8. हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, पृष्ठ.२३२
9. भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ.१०७, डॉ. गोपाल शर्मा, १९७४
10. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.५६
11. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.१६३
12. का'शरी अद्बुक तवारीख, पृष्ठ.१८१, अवतार कृष्ण रहबर
13. वही
14. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२०४
15. भारतीय भाषाओं के साहित्य का रूप दर्शन, पृष्ठ.१६५, गौरो शंकर पंडया
16. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२३९
17. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.८९, डॉ.शिबन कृष्ण रेणा

18. कश्मीरी ज़बान और शायरी, भाग 2, पृष्ठ.२२२-२२५
19. वही, पृष्ठ.२४८-२५१
20. वही, पृष्ठ.२७०-२७१
21. कश्मीरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ.९५

शोधार्थी :- संस्कृत विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर

फ़ोन नो. 7889341773